

सिंह और सियार

वर्षों पहले हिमालय की किसी कन्दरा में एक बलिष्ठ शेर रहा करता था। एक दिन वह एक भैंसे का शिकार और भक्षण कर अपनी गुफा को लौट रहा था। तभी रास्ते में उसे एक मरियल-सा सियार मिला जिसने उसे लेटकर दण्डवत् प्रणाम किया।

जब शेर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा तो उसने कहा, "सरकार में आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे आप अपनी शरण में ले लें। मैं आपकी सेवा करूँगा और आपके द्वारा छोड़े गये शिकार से अपना गुजर-बसर कर लूँगा।" शेर ने उसकी बात मान ली और उसे मित्रवत् अपनी शरण में रखा।

कुछ ही दिनों में शेर द्वारा छोड़े गये शिकार को खा-खा कर वह सियार बहुत मोटा हो गया।

प्रतिदिन सिंह के पराक्रम को देख-देख उसने भी स्वयं को सिंह का प्रतिरूप मान लिया। एक दिन उसने सिंह से कहा, 'अरे सिंह ! मैं भी अब तुम्हारी तरह शक्तिशाली हो गया हूँ। आज मैं एक हाथी का शिकार करूँगा और उसका भक्षण करूँगा और उसके बचे-खुचे माँस को तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा।'

चूँकि सिंह उस सियार को मित्रवत् देखता था, इसलिए उसने उसकी बातों का बुरा न मान उसे ऐसा करने से रोका।

भ्रम-जाल में फँसा वह दम्भी सियार सिंह के परामर्श को अस्वीकार करता हुआ पहाड़ की चोटी पर जा खड़ा हुआ। वहाँ से उसने चारों ओर नज़रे दौड़ाई तो पहाड़ के नीचे हाथियों के एक छोटे से समूह को देखा। फिर सिंह-नाद की तरह तीन बार सियार की आवाज़ें लगा कर एक बड़े हाथी के ऊपर कूद पड़ा। किन्तु हाथी के सिर के ऊपर न गिर वह उसके पैरों पर जा गिरा। और हाथी अपनी मस्तानी चाल से अपना अगला पैर उसके सिर के ऊपर रख आगे बढ़ गया। क्षण भर में सियार का सिर चकनाचूर हो गया और उसके प्राण पखेरु उड़ गये।

पहाड़ के ऊपर से सियार की सारी हरकतें देखता हुआ सिंह ने तब यह गाथा कही - 'होते हैं जो मूर्ख और घमण्डी, होती है उनकी ऐसी ही गति।'

सीख: घमंड और मूर्खता का साथ बहुत गहरा होता है, इसलिए कभी भी ज़िंदगी में किसी भी समय घमण्ड नहीं करना चाहिए।

मिठं ठर मिथार

वसुधैकुलविभालय की किमी कनगा भएक गलिधुसरे रका करुा घा। एक दिन वर एक रुमैका मिकार ठर रुब... कर सुपनी गदुा कलेए रका घा। उही राभुभेउमएक भरिबल-भा मिथार भिला एभन उमलेएकर ए...बुडा पू...भ किय।

एग मरे न उमभ रिभा करन के कार... पकू उ उमन केका, "भरकार भसुपका भवेक मनन गारुडा कृ...पुषा भए सुप सुपनी मर... भले लोभसुपकी भवे करुगा ठर सुपक एदुा ऊठे गेथ- मिकार भसुपना गएर-गभर कर लगंगा। मरे न उमकी गउ भान ली ठर उम भितुवउ सुपनी मर... भरोपा।

ककु की दिन भेमरे एदुा ऊठे गेथ मिकार कोपा-पा कर वर मिथार गदुडु भए क गेथ। पुरिदिन मिठं क पेराकूम क देपि-एपि उमन ही मय्यं क मिठं का पुरिपु भान लिथ। एक दिन उमन मिठं म केका, 'सुर मिठं! भसी सुर उमुदुगी उरु मकिमाली क गेथ कृ...सुए भएक काची का मिकार करुगा ठर उमका रुब... करुगा ठर उमक वेए-पेए भोभ क उमुदुग लिए ऊठे एगी।'

एकि मिठं उम मिथार क भितुवउा एपिउा घा, उमलिर उमन उमकी गउ के गुरा न भान उम रिभा करन भेरेके।

रुम-एल भद्रेभा वर एभी मिथार मिठं क पेराभस क भेभीकार करुा रुमु पकरु की एपी पर ए पकरु रुमु। वर भ उमन गार ठर नएर दे सुार उ पेकरु क नीए का विष के एक ऊठे मे मभरु क देपि। दिर मिठं-नाए की उरु उीन गार मिथार की सुवए लेगा कर एक गरु काची क उेपर कदु पर। किरु काची क भिर क उेपर न गिर वर उमक पेरे पर ए गिर। ठर काची सुपनी भभुनी गाल भसुपना सुगला पर उमक भिर क उेपर राप सुग वेदु गथ। ब... रु भ मिथार का भिर एकनाएरु क गेथ ठर उमक पे... पापरे उरु गथ।

पकरु क उेपर भ मिथार की भारी रुकउे एपिउा रुमु मिठं न उेग वर गाघा कली - 'रुठेरुए' भल्ल ठर अम... रुठी रु उेनकी रिभी की गडि।

भीप: अमंठ ठर भल्लु का भाष गदुडु गरुा रुठे रु, उमलिर कही ही एिंगी भकिमी ही मभय अम... नकी करन गारि।

सनद - विष्ट कौल एला